

wer is not protected at all. Taking advantage of this, the traders are forcing the growers to sell at distress prices.

This year, the traders have delayed the opening of the market. Even now, though they have formally opened, they are offering low prices. The price for a particular grade which used to sell at Rs 1000 is now Rs 500. So, the Government has to take steps immediately to protect the growers by taking their stocks with advance payment and compelling the traders to purchase the stocks at fair prices and if they refuse, their licences should be cancelled.

So many telegrams and messages have come. It is a very serious situation. I appeal to the Government to take note of it and to the rescue of the growers immediately.

(v) Reported Refusal by sugar Mills to buy sugarcane at officially fixed rate.

श्री बसन्त साठे (अरोला) : अध्यक्ष जी, मैं उप सदन का प्रायः सरकार का ध्यान एक बड़ा ही गम्भीर विषय की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। परमा मैं यहाँ गाजियाबाद गया था और वहाँ के लोग प्रायः उस इलाके के लोग इनके चिन्तित हैं। गन्ने के जो दाम एक-एक घट गये हैं। एक बहूत बड़ी मिल, मरुतनी शुगर मिल बन्द हो गई है। अम मन्त्री जो ध्यान दें, जो निश्चिन्त दाम थे 13 रु० 50 पैसे कानन से तय हुए, वह भी नहीं देने हैं। तो आप कानन में उनको कम्पैल कर सकते हैं, यहाँ तक कि उनकी मिल को टेक ओवर करने की भी आपके पाम ताकत है। लेकिन मिल मालिक कहते हैं कि जनता सरकार तो हमारी सरकार है। हमने इनको लाखों रुपये दिये हैं यह हमने खिलाफ क्या कार्यवाही कर सकते हैं। 13 रु० 50 पैसे दाम देने की वह तैयार नहीं है। खड़ा का खड़ा गन्ना, ईश सूख रही है। बहुत परेशान है

किसान। आज बाजू के किसान जो जय जयकार मनाने के लिये, किसान दिवस मनाने के लिये 23 अक्टूबर को यहाँ प्रायः थे, प्रायः वह किसान नारा लगा रहे हैं, "अकोला नौ, गन्ना छ, और बोलेगा चरण सिंह की जय। पाती सात और गन्ना छै। जय जनता की बोलिये गन्ना मुक्त तोलिये। इन्दिरा जी का नारा था तो गन्ना बिका 18 था। इन्दिरा गांधी आयेगी, फिर वही भाव लायेगी।" यह पच्चे में छपा है। यह चौधरी चरण सिंह के काले कारनामे का नोटिस होगा तो मुझे नहीं मालूम। 70 लाख टन गन्ना पैदा हुआ। अब कहा जा रहा है किसान को कि क्यों गन्ना ज्यादा पैदा किया? भूगतो। तो ज्यादा गन्ना पैदा करना यह भी गुनाह हो गया। ज्यादा गन्ना पैदा करो तो ज्यादा अक्कर पैदा होगी और उसको विदेशों में भेज कर विदेशी मुद्रा कमा सकते हैं। तो किसान ने अच्छा किया या बुरा किया? क्या सरकार की अक्ल का दिवाला पिट गया जो किसान को यह कहा जाय कि क्यों ज्यादा पैदा किया? मरा। ता यह बात कुछ मेरे समझ में नहीं आ रही है। आज वह क्या कहते हैं—अच्छा भइया हमने ज्यादा किया ना माँ छोड़ो, पिछले माल मिलो न जितना लिया था 65 लाख टन, उतना तो लेगे।

इण्डस्ट्रीज मिनिस्टर और लेबर मिनिस्टर बोनो मिल कर इस मिल को तो कम-स-बस कच्चे में ले कि खाली पैसा हो लेगे? मिल ले। आप किसानों को दाम दिलाइये, नहीं तो यह किसान दिवस मनाने वाले किसान यहाँ आगे दूसरा दिवस मनाने के लिये। मोर्चे,

I hope, this Government will take note of this. Otherwise, tomorrow you must not blame me that 'you did not bring this to the notice of the Government.'